अक्रम यूथ

सितम्बर 2019 | हिन्दी

दादा भगवान परिवार

₹ 20

अनुक्रमणिका

मोह अर्थात् क्या? 4

अक्रम पीडिया 6

मोह की वंशावली 9

मोह का स्वरूप 10

क्रूज़ ट्रीप 12

ज्ञानी की वैज्ञानिक दृष्टि से 14

15 यूथ एक्सपिरियन्स

16 चीज़ के स्पर्श से स्फूरित होता है मोह

18 मोह के रंग में

20 ज्ञानी विद यूथ

23 #कविता

सितम्बर 2019

वर्ष : 7, अंक : 05

अखंड क्रमांक : 77

संपर्क सूत्र :

ज्ञानी की छाया में,

त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,

अहमदाबाद-कलोल हाइवे,

मु.पो. - अडालज,

जिला : गांधीनगर-382421, गुजरात

फोन : (079) 39830100

email: akramyouth@dadabhagwan.org

website: youth.dadabhagwan.org

store.dadabhagwan.org/akram-youth

संपादक : डिम्पल मेहता

Printer & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gandhinagar

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gandhinagar

Printed at : Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025. Gujarat.

Total 24 Pages with Cover page

Subscription

Yearly Subscription

India :200 Rupees

USA: 15 Dollars

UK: 12 Pounds

5 Years Subscription

India : 800 Rupees

USA: 60 Dollars

UK: 50 Pounds

In India, D.D. / M.O. should be drawn in favour of "Mahavideh Foundation" payable at Ahmedabad.

© 2019, Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved

संपादकीय

प्यारे दोस्तों,

"मोह खिलाए मार" यह कहावत तो आप सभी ने कई बार सुनी होगी। लेकिन मोह किसे कहा जाए? नीत नए कपड़े पहनने का, घूमने जाने का, सिनेमा देखने का, होटल में खाने का, टी.वी. देखने का, कम्प्यूटर एवं मोबाइल पर गेम खेलने का, वगैरह, वगैरह... यह सूची तो बड़ी लंबी हो सकती है। ये सब मोह के ही प्रकार हैं और हम मोह के महासागर में डूबे हुए हैं। आपको ऐसा लग रहा होगा कि ये तो हमारी दैनिक प्रवृत्तियाँ हैं, इसे मोह कैसे कह सकते हैं?

लेकिन हमारी हर एक क्रिया एक या दूसरे मोह के वश में आकर ही होती रहती है। आश्चर्य की बात तो यह है कि हमें इसका पता तक नहीं चलता। अब जब मोह का ही पता नहीं चलता तो यह तो स्वाभाविक ही है कि मोह कैसे-कैसे मार खिलाता है, उसका पता तो चलेगा ही नहीं। अक्रम यूथ का यह अंक मोह में वश होकर हमें कैसे-कैसे मार खाने पड़ते हैं, यह समझने का और मोह के जाल में न फँसकर मुक्ति के आनंद में कैसे रहें, ऐसी समझ विकसित करने का एक विनम्र प्रयत्न है...

-डिम्पलभाई मेहता

मोह अर्थात् क्या?

दोस्तों, चलो एक गेम खेले।

स्टेप - 1 - क्रिकेट बेट या बेसबॉल का बेट लें।

स्टेप - 2 - आपके आसपास एक छोटा सर्कल बनाए और सर्कल से 15 स्टेप्स् दूर किसी चीज़ को, भगवान की मूर्ति या आपका गोल (लक्ष्य) रखें।

स्टेप - 3 - अब चित्र में बताए गए अनुसार आपने जो छोटा सर्कल बनाया है उसके अंदर खड़े रहें।

स्टेप - 4 - चित्र में बताए अनुसार बेट को अपने कपाल (ललाट) से लगाकर आँखें बंद करके उसी जगह पर दस राउन्ड घूमें।

स्टेप - 5 - 10 राउन्ड करने के बाद घूमना बंद करें और आँखें खोलकर तुरंत ही पंद्रह स्टेप्स् दूर आपने जो चीज़ रखी है उसे छूए।

क्या आप 15 स्टेप्स् चल पाए?

जिस तरह से अपना सारा ध्यान बेट पर ही केन्द्रित करके हम उसके ही पीछे घूमते रहे, उसी तरह से जीवन में भी हम पैसा, बॉयफ्रेन्ड, गर्लफ्रेन्ड, कीर्ति, पदवी, सत्ता वगैरह की प्रदक्षिणा करते रहते हैं। और इस तरह घूमते-घूमते हम ऐसे चक्कर में फँस जाते हैं कि अध्यात्म, मानवता एवं सुख-शांति तक पहुँचने में असमर्थ हो जाते हैं।

यह मोहरूपी दारू हमें इतना चढ़ जाता है कि आँखें होने के बावजूद भी हम सत्य देख नहीं पाते।

मोह अर्थात् क्या?? यों तो चंदू भाई एक अच्छे इंसान हैं लेकिन अगर उन्हें एक बोतल दारू पीला दें तो? "मैं राजा हूँ, मैं ऐसा हूँ और वैसा हूँ" ऐसा बोलने लगे, तो हम समझ जाते हैं न कि अब चढ़ गई है। इसे मोह चढ़ गया कहते हैं, इसे ही मोह कहते हैं।

मोह अर्थात् बेभानपना (बेसुधपन)। बेभानपना यानी "खुद" कौन है वह नहीं जानना। "जो है वह" नहीं दिखाई देता और "जो नहीं है वह" दिखाई देता है, इसे ही मोह कहते हैं।

इस प्रकार मोह को भ्रांति, अंधापन, बेभानपन, घोर अँधेरा, मीठास (भ्रांति की) जैसे अनेक उपनाम दिए गए हैं।

15 feet

अक्रम पीडिया

नाम - आयुष मेहता
उम्र - 19 वर्ष

हेल्लो फ्रेन्ड्स

मेरे द्वारा लिखे गए ब्लोग्स पढ़ने आपको अच्छे लगते होंगे ऐसी आशा के साथ आज फिर से मैं कुछ लेकर आया हूँ।

लगभग छः महीने पहले की बात है। मैं और मेरा फ्रेन्ड कृतार्थ सैर करने जूहू बीच पर गए। मिलते ही उसने हमारी क्लासमेट वृंदा का फोटो दिखाकर कहा कि, "आई लव हर।"

मेरी कुछ भी प्रतिक्रिया से पहले ही उसने कहा, "छः महीने से हम दोनों रिलेशन में हैं। अभी तक हमने किसी से नहीं कहा लेकिन आज तूझे कह रहा हूँ।"

"यानी तू उसके प्रति सिरियस है या जस्ट यों ही?" मैंने धीरे से पूछा। मेरा सवाल सुनते ही वह चिढ़ गया।

"तू मुझे पहले यह बता कि "प्रेम" यानी क्या?" और तूझे ऐसा क्यों लगता है कि तुम दोनों को एकदूसरे के प्रति जो है वह "प्रेम" ही है? उसके गुस्से को अनदेखा करके मैंने दूसरा सवाल भी पूछ ही लिया।

"दोस्त, प्रेम यानी पूरे दिन उसी की याद आना, उसे क्या पसंद है और क्या नापसंद यही सोचना, और उसी के अनुसार करना। उसका दुःख खुद का दुःख लगना..." कृतार्थ ने कहा कि "तूझे पता है जब मैं उसे घूमने ले जाता हूँ और उसके पसंद की चीज़ दिलाता हूँ तब उसके चेहरे पर मुस्कुराहट देखकर मेरा दिन सुधर जाता है। गुडमॉर्निंग और गुडनाइट के मेसेज से लेकर क्या खाया? क्या पीया? क्या पहना? हर छोटी से छोटी बात हम एकदूसरे के साथ शेयर करते हैं। अब तू ही बता कि क्या यह प्रेम नहीं है?"

"तुझे सचमुच लगता है कि यह "प्रेम" है? और तूझे क्या पता कि वृंदा भी तेरे लिए उतनी ही सिरियस है?

"वृंदा ने ही कहा है और मुझे उसकी बात पर विश्वास है।" कृतार्थ ने दृढ़ता से कहा।

"देख दोस्त, तूझे खुश देखकर मुझे भी खुशी होती है। मुझे सिर्फ यही डर है कि तेरा दिल न टूट जाए। हमारे सिनियर अनीष एवं राधा का क्या हाल हो गया है, वह हम जानते ही हैं। बैचारा अनीष डिप्रेशन में है।

मैं यह नहीं कह रहा कि तुम्हारे केस में भी ऐसा ही होगा लेकिन तू पहले पता कर ले कि जिसके बारे में तू इतना सोचता है वह तेरे लायक है भी या नहीं? मैंने उसे सलाह देते हुए कहा।

कृतार्थ ने कुछ प्रतिभाव नहीं दिया इसलिए मैंने अपने मोबाइल में दादा की ई बुक खोलकर उसे पढ़ने दी...

मोह में धोखा घड़ी!

बहुत मार खाने के बाद जो मोह था न, वह मोह छूट जाता है। सिर्फ मोह ही था। उसी का मार खाते रहे।

प्रश्नकर्ता : मोह और प्रेम इन दोनों में फर्क क्या है?

दादाश्री : यह पतंगा है न, वह दिए (ज्योत) के पीछे पड़कर जलकर खाक हो जाता है न? वह अपने ज़िंदगी खत्म कर देता है, यह मोह कहलाता है। जबकि प्रेम टिकता है, प्रेम टिकाऊ रहता है, यह मोह नहीं है। मोह यानी "यूज़लेस" (बेकार) जीवन। यह तो अँधे होने के समान है। अँधा व्यक्ति पतंगे की तरह घूमता रहता है और मार खाता है उसके जैसे और प्रेम तो टिकाऊ रहता है, उसमें तो पूरी ज़िंदगी का सुख चाहिए। वह सिर्फ उसी समय (तत्कालीन) के लिए सुख नहीं ढूँढता।

अर्थात् ये सब मोह ही है न! मोह यानी खुली धोखा-घड़ी। मोह यानी हंड्रेड परसेन्ट धोखा ही है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यह मोह है और यह प्रेम है, ऐसा सामान्य लोगों को पता कैसे चलेगा? एक व्यक्ति को सच्चा प्रेम है या यह उसका मोह है, ऐसा खुद को पता कैसे चलेगा?

दादाश्री : वह तो धमकाने से अपने आप पता चल जाएगा। एक दिन घमकाएँ और वह चिढ़ जाए तो समझ ही जाएँगे न कि यूज़लेस है। फिर क्या हालत होगी? इसके बजाय पहले से ही धमकाना चाहिए। रुपये को बजाकर देखें तो कलदार है या बहरा है तुरंत पता चल जाएगा न? कुछ बहाना करके उसे धमकाना चाहिए। आजकल तो नीरे भयंकर स्वार्थ रहते हैं! स्वार्थ के कारण हर कोई प्रेम दिखाता है लेकिन एक दिन धमकाएँ तो पता चलेगा कि यह सच्चा प्रेम है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : जहाँ सच्चा प्रेम है वहाँ कैसा रहता है, धमकाने पर भी?

दादाश्री : वह तो धमकाने पर भी शांत रहकर सामने वाले को हानि नहीं पहुँचाता। जहाँ सच्चा प्रेम रहता है वहाँ सह लेता है। अब अगर बिल्कुल बदमाश रहा न तो वह भी सह लेता है।

कृतार्थ ने पढ़कर फोन मुझे वापस देते हुए कहा, "ठीक है, तो बोल आगे क्या करना है?"

हम दोनों ने मिलकर तय किया कि एक महीने के लिए कृतार्थ वृंदा के साथ फोन पर ज़रूरत के अनुसार ही बातें करेगा और थोड़े ही दिनों बाद वेलेन्टाइन डे आ रहा है तो कृतार्थ गिफ्ट देना, बाहर घूमने जाना या दूसरे कोई भी फालतू खर्चे नहीं करेगा। हम दोनों ने एक महीने बाद वापस इसी जगह पर मिलने का तय किया।

एक महीना पूरा होने के बाद हम वापस उसी जगह पर मिले।

कृतार्थ मूड़ में नहीं लग रहा था। उसने कहा, "हमने तय किया था वैसे ही मैंने एक महीने के लिए किया। वेलेन्टाइन डे के दिन मैंने उसे गिफ्ट नहीं दी इसलिए वह रुठ गई। उसका मूड ठीक करने के लिए मैं उसे शॉपिंग करवाने ले गया। उसने 2500 रुपये का ड्रेस पसंद किया तो मैंने कहा कि अभी तो मेरे पास सिर्फ 1500 रुपये हैं इसलिए 1000 रुपये तू दे दे। तो ड्रेस फेंककर वह वहाँ से चली गई और दो दिनों तक उसने मेरे फोन और मेसेज का कोई जवाब नहीं दिया। कॉलेज में मैं उसके साथ बात करने गया तो उसने मुझ पर इलज़ाम लगाया कि मैं उसे इग्नोर कर रहा हूँ क्योंकि मुझे कोई और पसंद आ गई है। मैंने उसे मनाने की बहुत कोशिश की कि, "हम एकदूसरे से प्रेम करते हैं। एकदूसरे के मन को समझकर हम नॉर्मेलिटी में रहे तो कितना अच्छा। शॉपिंग, घूमना, फिरना और एकदूसरे से बातें करना ही प्रेम नहीं है।"

मेरी ऐसी बातें सुनकर उसे और भी गुस्सा आ गया। उसने कहा, "तू कितना अमीर है, यह सब जानते हैं और फिर भी मुझे एक ड्रेस दिलवाने में तूझे तकलीफ है? अच्छा हुआ कि तेरी कंजूसी के बारे में मुझे अभी से पता चल गया। तेरे से अच्छा तो अमन है, मेरा रोना उसे बिल्कुल भी पसंद नहीं है। मुझे खुश रखने के लिए वह सारी-सारी रात जागकर मुझसे बातें करता है... यह वाक्य सुनते ही बिना कुछ कहें मैं वहाँ से चला आया और दो-तीन दिनों के बाद ही पता चला कि वृंदा और अमन अब साथ में घूमते हैं।

कृतार्थ के लिए मुझे बहुत दुःख हुआ। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मैं उसे क्या कहूँ। लेकिन एक बात की खुशी भी थी कि प्रेम और मोह के बीच का फर्क वह समझ गया था और मोह के बेस पर बनने वाले रिलेशन में से वह बच गया था।

"तू कितना अमीर है, यह सब जानते हैं और फिर भी मुझे एक ड्रेस दिलवाने में तूझे तकलीफ है? अच्छा हुआ कि तेरी कंजूसी के बारे में मुझे अभी से पता चल गया। तेरे से अच्छा तो अमन है, मेरा रोना उसे बिल्कुल भी पसंद नहीं है। मुझे खुश रखने के लिए वह सारी-सारी रात जागकर मुझसे बातें करता है...

मोह की वंशावली

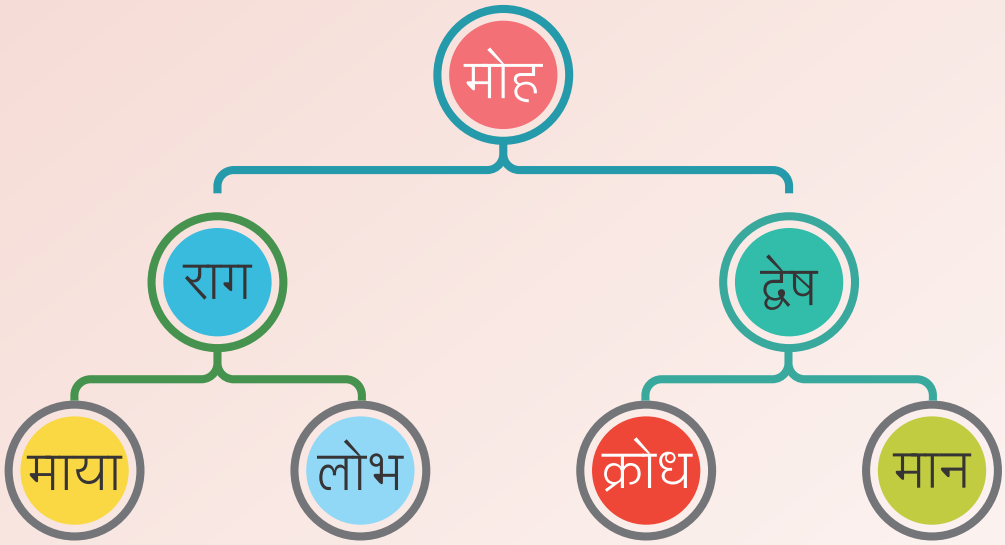

मोह के दो बेटे राग और द्वेष।

राग-द्वेष - प्रिय चीज़, व्यक्ति या परिस्थिति में चित्त लगे तो राग आता है और अप्रिय चीज़, व्यक्ति या परिस्थिति में चित्त लगे तो द्वेष आता है। जहाँ-जहाँ ज्यादा राग वहाँ माया और लोभ बढ़ता है और जहाँ ज्यादा द्वेष वहाँ क्रोध एवं मान बढ़ता है।

माया - लोभ - मनपसंद चाहे जितना भी मिले फिर भी ज्यादा प्राप्त करने की भूख न मिटे वह लोभ है और मनपसंद अच्छा है या बुरा इसका विवेक न रहे और मनपसंद में सुख न होने के बावजूद भी उसमें सुख का आरोपण करके मान्यता का सुख उत्पन्न करना वह माया है।

क्रोध - मान - नापसंद के समय कुछ कर न पाए तब क्रोध आता है और "मैं कुछ विशेष हूँ..." ऐसी मान्यता को मान कहते हैं।

मोह के तो अनंत प्रकार हैं। उसका अंत नहीं है।
एक मोह छोड़ने के लिए लाखों जनम लेने पड़ेंगे।
मनुष्यपना तो मोह का संग्रहस्थान ही है।

मोह का स्वरूप

हँसते-खेलते रमणचाचा के आँगन से आज कुहराम और रुदन सुनाई दे रहा है। सी - 58 के साथ पूरी सुंदरवन सोसाइटी भी शोक में डूब गई है। 33 साल के आकाश के शव को देखकर पूरा घर दुःखी होकर भयंकर आक्रंद कर रहा है।

युवा बेटे की अंतिम क्रिया का समय आ गया है, लेकिन सालों से उन्हें जिन स्वामी जी पर आस्था है उनकी राह देख रहे हैं।

घर में प्रवेश करते ही स्वामी जी ने पूरे परिवार को शोकमग्न हालत में देखा। उन्हें देखकर उमा और भी ज़ोरों से रोने लगी।

"स्वामी जी, देखिए न इन्हें क्या हो गया... मुझे छोड़कर चले गए... अब मेरा और ध्यान का कौन??? नहीं, मैं उन्हें इस तरह से हमें छोड़कर जाने नहीं दूँगी। मैं कुछ भी करके उन्हें वापस लाऊँगी।"

तभी माँ-बाबूजी ने हाथ जोड़कर बहुत करुण स्वर में कहा, "हमारा बेटा... आकाश... उम्र ही क्या थी उसकी? आप कुछ करीए न स्वामी जी... कुछ भी करके आप मेरे बेटे को वापस ले आइए..." कहते हुए बाबूजी, स्वामी जी के कदमों में गिर जाते हैं।

यह सब देख-देखकर ध्यान ज़ोर-ज़ोर से रोने लगता है। स्वामी जी सांत्वना देने का बहुत प्रयत्न करते हैं लेकिन व्यर्थ... इस आघात को सह पाना इतना आसान तो नहीं है न!

अंत में स्वामी जी ने कहा, "मुझे एक गिलास पानी दें।"

पानी लेकर वे आकाश के मृतदेह के पास बैठ जाते हैं और मंत्रोच्चार करने लगते हैं... थोड़ी देर के बाद वे कहते हैं, "जो कोई भी चाहता है कि आकाश पुर्नजीवित हो जाए वह यह पानी पी ले। पानी पीते ही आकाश पुर्नजीवित हो जाएगा, लेकिन जो पानी पीएगा उसकी मृत्यु हो जाएगी।"

स्वामी जी की बात सुनकर वातावरण में चुप्पी छा गई। "चलो, कौन तैयार है पानी पीने के लिए? आ जाओ जल्दी..."

सब एकदूसरे को देखने लगे लेकिन कोई भी आगे नहीं आया।

स्वामी जी ने बाबूजी से पूछा, "आप अपने बेटे की खातिर अपनी जान देंगे?" वृद्ध बाबूजी कहने लगे, "मैं तो इस घर का बुर्जुग हूँ। मुझे ही तो सभी को संभालना है, अगर मैं चला गया तो इन सभी को कौन संभालेगा?"

जो कोई भी चाहता है कि आकाश पुर्नजीवित हो जाए वह यह पानी पी ले। पानी पीते ही आकाश पुर्नजीवित हो जाएगा, लेकिन जो पानी पीएगा उसकी मृत्यु हो जाएगी।

स्वामी जी ने प्रश्नात्मक नज़रों से माँ की ओर देखा। तभी माँ ने कहा, "स्वामी जी मेरी बेटी गर्भवती है। अब महीने भर रुकने के लिए आने वाली है, अगर मैं ही चली गई तो उसकी और आने वाले बच्चे की देखरेख कौन करेगा? आप उमा से ही पूछीए, "कुछ भी करूँगी, कह रही थी न, उससे ही पूछें।"

स्वामी जी ने मुस्कुराते हुआ उमा की ओर देखा, तभी उमा ने घबराकर कहा, "मुझे तो बेटे के लिए जीना पड़ेगा न। मैं ही मर गई तो उसे कौन देखेगा? उसे मेरी ज़रूरत है। मेहरबानी करके इस बलिदान के लिए मुझसे मत कहिए।"

अंत में स्वामी जी ने ध्यान से पूछा, "बोल बेटा, अपने पिता के लिए तू अपनी जान देगा?" ध्यान के कुछ कहने से पहले ही उमा उसे अपने सीने से लगाकर बोली, "आप इतने क्रूर कैसे बन सकते हैं? उसकी उम्र तो देखिए। अभी तो उसने दुनिया भी नहीं देखी है। आप ऐसा सोच भी कैसे सकते हैं।"

स्वामी जी ने कहा, "लगता है आप सभी की इस दुनिया में बहुत ज़रूरत है। सिर्फ आकाश की ही ज़रूरत नहीं थी, इसीलिए भगवान ने उसे ही बुलाने का तया किया। चलो, अंतिम क्रिया निपटाते हैं, देर हो रही है।"

इस संसार में हर एक व्यक्ति अंदर से तो सिर्फ और सिर्फ अपने लिए ही सोचता है, अन्य किसी के लिए भी नहीं। यही जीवन का सत्य है। यही मोह का स्वरूप है! क्या खुद पर का मोह अन्य सांसारिक मोह से भी बढ़कर है?" ऐसा सोचते हुए स्वामी जी घर से बाहर आते हैं।

क्रूज़ ट्रीप

चलो फ्रेन्डस्... कम ओन... जल्दी पैकिंग करो... हम 15 दिनों के लिए क्रूज़ में जाएँगे। क्रूज़ में बहुत कुछ रहेगा, जैसेकि डान्स क्लबस्, मूवी थिएटर, स्पोर्ट एरिया, फूड कोर्ट, स्वीमिंग पुल और अन्य सबकुछ। हम बहुत मज़ा करेंगे तो चलो, हम कौन-कौन सी चीज़ें ले जाएँगे उसकी चेक-लिस्ट बनाएँ।

पाँच दिनों से सब लोग क्रूज़ पर मज़ा कर रहे थे तभी सूचित किया जाता है कि, जहाज बड़ी हिमशीला से टकरा गया है और इसमें बड़ी दरार आ गई है। रडार सिस्टम खराब होने के कारण कैप्टन हिमशीला को डिटेक्ट नहीं कर पाए। अब जहाज समुद्र के ऐसे एरिया में है कि जहाँ सिग्नल्स नहीं मिल रहे। बचने के लिए छोटी बोट में नज़दीकी आइलैन्ड पर पहुँचना है। जहाज खाली करने के लिए एक घंटे का समय है। बोट में ज्यादा लोग आ सकें और वज़न न बढ़े इसलिए ज़रूरत की दस चीज़ें ही साथ में ले जा सकेंगे। हर एक से निवेदन है कि ऐसी ही चीज़ें साथ में लें जो आवश्यक हों और उपयोग में आ सकें क्योंकि अगले दस दिनों तक मदद की कोई आशा नहीं है। आइलैन्ड में जंगल में बारिश हो सकती है और खाने के लिए कुछ मिलेगा या नहीं यह भी पता नहीं है।

चलो, अब आइलैन्ड पर ले जाने की चीज़ों का लिस्ट बनाएँगे।
फ्रेन्डस मेरा लिस्ट कुछ इस प्रकार से हो सकता है।

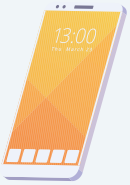

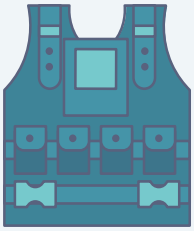

फर्स्ट एइड कीट

सेफ्टी जैकेट

पानी की बोतल

फूड आइटम्स्

ज़रूरी डोक्यूमेन्ट (पासपोर्ट) वगैरह

टोर्च

ज़रूरी कपड़े

छत्री

वोटर प्रूफ बेग

मोबाइल

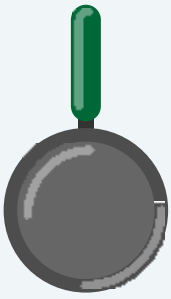

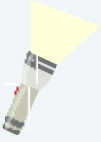

क्रूज़ के लिए घर से निकले तब चीज़ों का लिस्ट कुछ और था। अगर आइलैन्ड पर ज्यादा चीज़ें ले जा सकते हम सारी चीज़ें साथ ले जाते लेकिन जब दस ही चीज़ें लेने को कहा तो बहुत सी चीज़ें बिनज़रूरी लगी।

खाने-पीने की, कपड़े वगैरह सब आवश्यक चीज़ें कहलाती हैं और इनके अलावा सब अनावश्यक जिनकी कोई ज़रूरत नहीं है।

इस प्रकार से हमारे जीवन में भी बिनज़रूरी चीज़ें रहती हैं जिन्हें हम अपने मोहवशात् छोड़ नहीं पाते और ज़रूरी चीज़ों की अवगणना करते हैं। तो चलो, हमारे जीवन में आवश्यक-अनावश्यक क्या है जानेंगे।

तो चलो, इस बारे में दादाश्री का क्या कहना है...

ज्ञानी की वैज्ञानिक दृष्टि से

उतार दें भाव अनावश्यक पर से

यानी इस संसार में आवश्यक चीज़ कौन सी है और अनावश्यक कौन सी है, यह तय कर लें। आवश्यक यानी अवश्य ज़रूरत पड़ेगी और अनावश्यक तो अपने पर ले लिया है, मोह के कारण। अब अनावश्यक कम भी नहीं कर सकते। कोई कहेगा, मैं कम करना चाहता हूँ लेकिन कर नहीं पा रहा। बेटे की बहू झगड़े करती है, घर में बीवी किच-किच करती है लेकिन मन में इतना भाव रहता है कि मुझे कम करना है, इतना भाव रहे तो भी बहुत हो गया।

ऐसा है कि हमें ज़िंदगी में आवश्यक और अनावश्यक दोनों का लिस्ट बनाना चाहिए। हमारे घर में हर एक चीज़ देख लेनी चाहिए उसमें से आवश्यक चीज़ें कितनी है और अनावश्यक कितनी हैं। अनावश्यक पर से भाव हटा लेना चाहिए और आवश्यक पर तो भाव रखना ही पड़ेगा, चारा ही नहीं है न!

जितनी ज्यादा अनावश्यक चीज़ें उतनी ज्यादा झंझट। आवश्यक भी झंझट ही है फिर भी उन्हें झंझट माना नहीं जाता क्योंकि ज़रूरत है लेकिन अनावश्यक तो झंझट ही है।

आवश्यक का नियम क्या है?

एक ज़मीनदार मेरे पास आया। और वह पूछने लगा कि "जीवन जीने के लिए कितनी चीज़ों की आवश्यकता है?" मेरे पास हज़ार बीघा ज़मीन है, बंगला है, दो गाड़ियाँ हैं और अच्छा खासा बेंक बैलेन्स भी है, तो मुझे कितना रखना चाहिए! मैंने कहा, "देखो, हर एक की ज़रूरत कितनी रहनी चाहिए उसका अंदाज़ा उसके जन्म के समय कितना शानोशौकत थी उस पर से तू पूरी ज़िंदगी की ज़रूरत तय कर ले। यही वास्तविक नियम है।" यह तो सब एक्सेस (ज़रूरत से ज्यादा) है और एक्सेस तो ज़हर है, मर जाएगा।

कुदरत का नियम ऐसा है कि हर एक को अपनी ज़रूरत के अनुसार सुख मिल ही जाता है। हर एक का भरा हुआ "टेन्डर" पूरा होगा ही। जिन-जिन चीज़ों की ज़रूरत है वह सारी चीज़ें घर पर बैठे-बैठे ही हाज़िर हो जाएँगी।

यूथ एक्सपिरियन्स

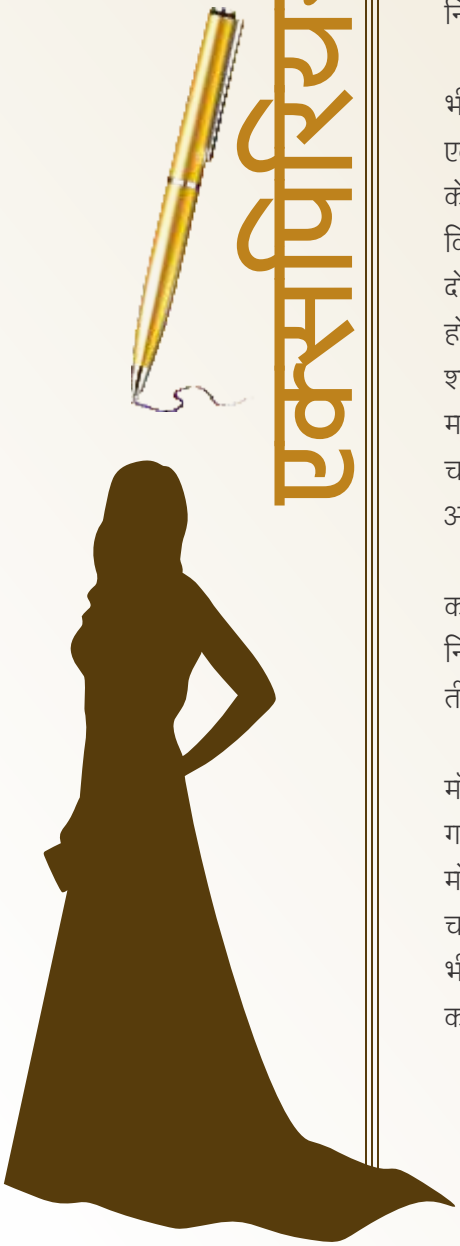

मेरी शादी से पहले जब मैं अहमदाबाद में रहती थी तब मुझे तैयार होने का और फेशनेबल कपड़े पहनने का बहुत शौक था। शादी के बाद में सीमंधर सिटी रहने आ गई और मैंने देखा कि यहाँ तो सब सादगी से रहते हैं। मुझे पता ही नहीं चला कि कब मैं भी तैयार होना भूल गई और सादगी से रहने लगी। मुझे ऐसा लगने लगा कि "तैयार होने का मेरा मोह पूरा (खत्म) हो गया है।" बिना किसी प्रयत्न के अपने आप ही इस मोह में से निकल जाने का मुझे बहुत आनंद था।

कुछ समय बाद मौसेरे भाई की शादी तय हुई और हमें भी आमंत्रित किया गया। अहमदाबाद से तीन घंटे की दूरी पर एक गाँव में तीन दिन का प्रसंग था। एक दिन सगाई और मामा के घर से शगुन, एक दिन रास-गरबा और फिर शादी। ऐसा हुआ कि वहाँ कोई अच्छा ब्यूटी पार्लर नहीं था। मैं सोचने लगी, "पहले दो दिन तो शायद चला लूँगी लेकिन शादी वाले दिन तो तैयार होना पड़ेगा न। व्यवहार में इतना भी नहीं करेंगे तो कैसे लगेंगे! शादी के तीन दिन पहले से ही मैंने इतनी तैयारियाँ शुरू कर दी मानो मुझे अपनी शादी में तैयार होना है। मेरे मन में बस यही चल रहा था कि "तैयार कहाँ होऊँगी! क्या करूँगी! इन कपड़ों और गहनों में कैसी लगूँगी?....

अंत में मैंने अहमदाबाद में ही एक ब्यूटी पार्लर बूक करवाया और रास-गरबा के बाद रात को एक बजे वहाँ से निकलकर सुबह 4 बजे ब्यूटी पार्लर में तैयार होने गई और फिर तीन घंटे की दूरी तय करके शादी में पहुँच गई।

यह होने के बाद एक दिन सुबह सोनेरी प्रभात में नीरू माँ ने कहा कि, कई लोगों को ऐसा लगता है कि "मेरा मोह चला गया (खत्म हो गया) है लेकिन दुकान में हीरे का हार देखते ही मोह उत्पन्न हो जाता है और शॉपिंग मोल में तो कई शो रूम की चकाचौंध देखकर सब जगह घूमते हैं और ज़रूरत न होने पर भी खरीद लेते हैं, ऐसा है यह मोह.... इस तरह से कई कपट कर लेते हैं। तब लगा कि "भाई, मोह तो कहीं गया ही नहीं है।"

क्या नहीं करवाता यह मोह!!!

दादाश्री के पुस्तक की झलक

चीज़ के स्पर्श से स्फुरित होता है मोह

प्रश्नकर्ता : दादा, मुझे अब गहनों का मोह नहीं है लेकिन अभी भी कपड़े तो अच्छे ही चाहिए।

दादाश्री : ये सारे मोह ही हैं। अभी गहनें नहीं हों लेकिन गहने पहने तब फिर गहनों पर भी मोह आता है।

प्रश्नकर्ता : नहीं दादा, उसकी गारन्टी।

दादाश्री : नहीं, हीरे पहनें तो हीरे पर मोह आता है। यह तो स्वभाव है चीज़ छूने से ही मोह आता है मोही को। निर्मोही को तो किसी भी स्पर्श से फर्क नहीं पड़ता।

एक व्यक्ति को पूरी ज़िंदगी जेल में रहना पड़े तो उसे खाना तो मिलता है लेकिन जलेबी-लड्डू नहीं मिलते तो इसका मतलब यह थोड़ी है कि उसका मोह चला गया। नहीं, अंदर तो मोह रहता ही है। मिल नहीं रहा, इस कारण से मोह चला गया नहीं कह सकते।

प्रश्नकर्ता : इस शरीर का अच्छी तरह से ध्यान रखूँ ऐसा सब मोह तो है। देखिए, कितने बाल सफेद है, बालों को डाई (काले) करने का मोह नहीं जाता।

दादाश्री : हाँ, नहीं जाता।

प्रश्नकर्ता : यह चाहिए, ऐसा लगता है कि ज़रा अच्छी तरह से रहें। गहने नहीं लेकिन कपड़े तो अच्छे चाहिए।

दादाश्री : वह तो पहले की पड़ी हुई आदत जाती नहीं है। लेकिन हमें अंदर कहना चाहिए कि चंदू भाई थोड़े तो बदल जाओ। कब तक बालों को काला करेंगे? लेकिन फिर भी वे बालों को काला किए बगैर रहेंगे नहीं।

प्रश्नकर्ता : हाँ, ऐसा ही होता है।

दादाश्री : क्योंकि वह तो द्रव्यकर्म है लेकिन हमें भाव बदल देने चाहिए।

अमरीका में हमें स्टॉर में ले जाते हैं। चलिए, दादा कहते हैं। स्टॉर तो बैचारा हमारे पैर छूते रहता है कि धन्य है।

पूरे स्टॉर में कही भी दृष्टि नहीं बिगाड़ी! हमारी दृष्टि बिगड़ती ही नहीं है न उस पर। हम देखते हैं लेकिन दृष्टि नहीं बिगड़ती। हमें क्या ज़रूरत है किसी चीज़ की। मुझे कोई भी चीज़ काम नहीं आती न! तुम्हारी दृष्टि बिगड़ जाती है न!

मोह के रंग में

मोह के रंग में रंगी हुई इस दुनिया में टिके रहने के लिए हम क्या-क्या करते हैं... चलो देखे!

अभी की कॉलेज लाइफ अभी-अभी शुरू हुई है और आज वह आतुरता से अपनी मम्मी की राह देख रही है। पिछले आधे घंटें से उसकी नज़र दरवाज़े पर ज्यादा और मोबाइल पर कम है।

डोरबेल बजी, "ओह! मोम, वेलकम होम। मैं कब से तुम्हारी राह देख रही हूँ। मुझे कुछ टिप्स चाहिए।"

"यस डिअर। आज मम्मी के टिप्स की भी ज़रूरत पड़ ही गई, है न!!! बोल क्या हुआ"? मम्मी ने कहा।

"मम्मी, तू कितनी फेमस है। मतलब, अपनी फैमिली में तूझे सब बहुत प्यार से बुलाते हैं, किसी को भी तेरे लिए शिकायत नहीं है। तेरी फ्रेन्ड रीटा आन्टी भी कह रही थी कि तूझे कॉलेज में, "मोस्ट पोप्युलर स्टूडन्ट" का एवार्ड मिला था। मम्मी, तुम्हारी सुंदरता का रहस्य क्या है?" थोड़ी देर सोचने के बाद मम्मी अपने पोप्युलर होने का रहस्य कहती है।

आपको क्या लगता है, वह रहस्य क्या होगा?

१) क्रेश डायट करके बॉडी मेइन्टेन रखी होगी?

२) वेइट लोस पिल्स ली होगी?

३) स्टीरोइड इंजेक्शन लेकर शरीर को सुडोल बनाया होगा।

४) आकर्षक दिखने के लिए स्कीन व्हाइटनिंग ट्रीटमेन्ट और बॉडी कोन्टूरिंग जैसी सर्जरी करवाई होगी?

अमी की मम्मी ने इनमें कुछ भी नहीं किया था क्योंकि उनके परिणाम हानिकारक रहते हैं।

क्रेश डायट का परिणाम - रीसर्च से पता चला है कि क्रेश डायट आपकी जठराग्नि को मंद करता है और बॉडी को पोषक तत्व मिल नहीं पाते। रोग प्रतिकारक शक्ति में कमी आ जाती है जिससे डिहाइड्रेशन एवं हृदयरोग हो सकते हैं।

वेइट लोस पिल्स लेने का परिणाम - BBC के रिपॉर्ट के अनुसार, 21 साल की एक स्टूडन्ट की इन गोलियों को खाने से मृत्यु हो गई थी। ये गोलियाँ एक प्रकार का ड्रग्स है जो अंतःस्त्रावों को डिस्टर्ब करता है, जिससे हार्ट रेट बढ़ना, ब्लड प्रेशर बढ़ना जैसी कई गंभीर समस्याएँ हो सकती है।

स्किन व्हाइटनिंग ट्रीटमेन्ट और बॉडी कोन्टूरिंग का परिणाम - सर्जिकल रिस्क जिसमें ब्लीडिंग और इन्फेक्शन की सब से ज्यादा संभावनाएँ हैं।

स्टिरोइड इंजेक्शन का परिणाम - स्टिरोइड एक प्रकार का ड्रग है। जिसकी आदत से चिढ़चिढ़ापन, आक्रमकता, उदासीनता या आत्महत्या करने की वृत्तियाँ बढ़ जाती हैं।

अमी की मम्मी ने समझाया कि किसी भी व्यक्ति की पोप्युलारिटी का आधार ऊपर कही गई चीज़ों से नहीं बल्कि **नीचे दिए गए गुणों पर होता है।**

आत्मविश्वास - अपने आप पर भरोसा रखना।

परिणाम - जिससे मानसिक स्थिरता बढ़ती है और ध्येय की ओर आगे बढ़ने में मदद मिलती है।

पॉज़िटिविटी - किसी भी खराब या नेगेटिव परिस्थिति में कुछ अच्छा ढूँढ निकालने की शक्ति।

परिणाम : किसी भी परिस्थिति में दुःख नहीं होगा। पॉज़िटिविटी से आसपास के लोग भी खुश रहेंगे और ऐसा स्वभाव विकसित करने से कार्यों को अच्छी तरह से पूरा करने की क्षमता बढ़ती है।

हेल्पिंग नेचर - खुद से हो सके उतनी लोगों की मदद करना।

परिणाम - लोग हमारे प्रति पॉज़िटिव रहेंगे और बड़ों का आशीर्वाद मिलेगा।

लोगों के साथ अच्छा व्यवहार :

हमारी ओर से बड़ों के प्रति विनय और छोटों के प्रति प्रेम वह सदा सुखी रहने की चाबी है।

परिणाम - जिसका व्यवहार अच्छा है वह अपने आप ही लोकप्रिय हो जाता है। बहुत सुंदर दिखाई देने वाली व्यक्ति अगर बात-बात में आपका अपमान करे या फिर बूरे शब्द, असभ्य वाणी का उपयोग करें तो क्या आप उसके दोस्त बनना पसंद करेंगे?

ध्येय से चिपके रहना - तय किए गए ध्येय के अनुसार करना और सफलता प्राप्त करना।

परिणाम - सफल व्यक्ति हर किसी को अच्छा लगता है। फिर भले ही देखने में वह अच्छा न हो या उसके अंगों में खामी हो।

आपको क्या लगता है? अमी को अपनी मम्मी द्वारा दी गई टिप्स के अनुसार करना चाहिए या बाह्य दिखावे के मोह में खुद की हानि हो ऐसे स्टेप्स् लेने चाहिए?

ज्ञानी विद यूथ

प्रश्नकर्ता : मुझे खुद पर बहुत मोह है, तो उसे निकालने के लिए क्या करूँ?

पूज्यश्री : खुद पर मोह यानी क्या? खाना-पीना ये सब?

प्रश्नकर्ता : हाँ, ये सब भी और खासतौर पर मेरे फोटो खींचने का।

पूज्यश्री : फोटो और सेल्फी लेने का?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

पूज्यश्री : फिर उन्हें किसे दिखाते हो?

प्रश्नकर्ता : मैं खुद ही देखता रहता हूँ और अपलोड भी करता हूँ।

पूज्यश्री : लेकिन अपलोड किसे करते हो?

प्रश्नकर्ता : सभी सोशियल नेटवर्किंग ऐप्स में....

पूज्यश्री : ये... सारे घोटाले हैं सब। आपके फोटो गाँव के लोगों तक पहुँचाकर करना क्या है? इसके बजाय दादा के, नीरू माँ के, सीमंधर स्वामी के या किसी भगवान के फोटो रखो... कोई देखेगा तो उसे भी भाव होगा कि मुझे मोक्ष में जाना है, आपकी शरण में आना है। यह तो अभी अगर चमड़ी का रोग होगा न, तो चेहरा खराब हो जाएगा। इसमें मोह करने जैसा है क्या? फॉरेन जाना हो और एयरपोर्ट पहुँचने के लिए गाड़ी में बैठने के

बजाय गाड़ी को सहलाते रहें, धोते रहें, साफ करते रहें, कलर करते रहें और पूरे दिन गाड़ी को प्यार करते रहें कि, "मेरी गाड़ी कितनी अच्छी..." अरे, लेकिन गाड़ी तो साधन है। एयरपोर्ट जाना छोड़ देंगे तो क्या होगा? आपको फॉरेन जाना है तो पहुँच जाइए न! ऐसे ही गाड़ी की तरह यह देह भी साधन है। उसे सुंदर बनाएँगे और सभी जगह फोटो भेजेंगे तो लोग क्या हमारी पूजा करेंगे?

प्रश्नकर्ता : बिल्कुल नहीं।

पूज्यश्री : तो क्या करेंगे?

प्रश्नकर्ता : कमेन्टस् करेंगे।

पूज्यश्री : अरे, लोग नज़र बिगाड़ेंगे। कितने भाव बिगाड़ेंगे और फिर हमारा जन्म बिगड़ जाएगा। यानी जब अंदर सुख नहीं रहता न तब ऐसा सभी करते हैं।

इसलिए तय करना चाहिए कि सोशियल नेटवर्किंग और फोटो में समय बरबाद करने के बजाय पहले माँ-बाप को खुश रखना चाहिए। मम्मी-पापा की सेवा करें और उन्हें सहायता करें वह काम का है। यह तो सब मोह में चला जाता है। ये तो जब सुख नहीं रहता न, तब बाहर से सुख लेने जाते हैं। जैसेकि बदबूदार व्यक्ति स्प्रे छिड़ककर फिर कहता है कि मैं कितना सुगंधित हूँ।" अरे, बदबू आ रही है इसलिए सुगंध लानी पड़ी न? साफ-सुथरे व्यक्ति को सुगंध की ज़रूरत ही कहाँ है? अर्थात् यह मोह गलत रास्ता है इसके बजाय सहजता, सात्विकता, संस्कारिता और व्यवहारिकता रहनी चाहिए। लेकिन इस तरह से एक्सेस नहीं रहना चाहिए कि हम दिन का और जीवन का काफी समय मोह में व्यर्थ गँवा दें।

प्रश्नकर्ता : मोह में से निकलने की शक्ति देना पूज्यश्री।

Youth App

Today's Youth

The Official App of
Dada Bhagwan Youth Group

ANDROID APP ON Google play

Download on the App Store

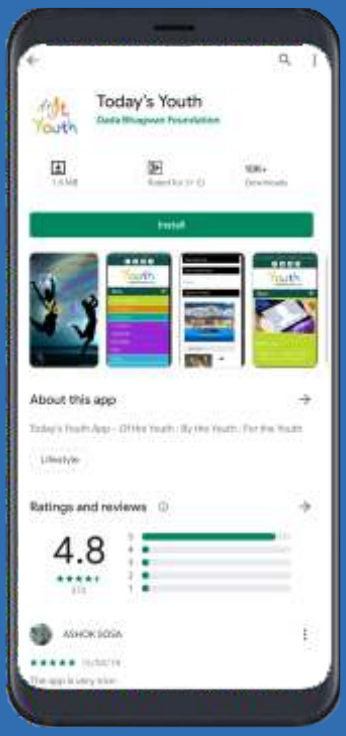

Download App now...

for visiting **youth.dadabhagwan.org**
for downloading Free PDF of **Akram Youth magazine**
for **Subscribing** to Akram Youth Magazine
to play **JJ112 Lucky Draw**
and much more...

#कविता

परवशता का अंत नहीं और पल-पल हाँलाकि है...
फिर भी छूटने का नहीं सूझे, मोह "उसके" काफी बाकी हैं...

नहीं आने वाले जो साथ में, उन सुखों की "उसे इच्छा है..."
कभी व्यक्ति, कभी चीज़ों से "वह" बंध जाता है...

अभी भी कहीं मीठे रस की आश में भटकता फिर रहा है...
कहीं न कहीं, कुछ न कुछ माँगता फिर रहा है...

यों तो "वह" है बहुत महँगा, लेकिन सस्ते में बिक जाता है...
है चीज़ बिल्कुल मामुली और चित्त चोरी हो जाता है...

मोह से "मेरा" और "मेरे" के लपेट में आता है...
"खुद" कौन है, यह जवाब ही कहाँ मिल पाता है?

एक मोह राजा और बड़ी उसकी सेना है...
क्रोध, मान, माया, लोभ उसके सिपाही हैं...

सितम्बर 2019
वर्ष : 7, अंक : 05
अखंड क्रमांक : 77

संसार में किसी भी प्रकार के दुःख हैं,

उन सभी का कारण मोह है।

- दादाश्री

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.